मोरंगे

जुलाई – अगस्त, 2024

इस बार

खिड़की

खुमिया – लियो टॉल्सटॉय

गीत कविताएँ

साइकिल चलाऊँ – अनूप बैरवा
धूल की भूल – चाँद नायक
अमारो स्कूल –दरबार नायक
बारिश आने आने को है – ज्योति गौतम
ठण्डी बारिश गरम पकौड़े – जगदीश चन्द्र कोली
एक कमरे का घर – सुनीता सैन

कहानियाँ

एक इंसान और उसका बेटा–पायल सैनी
गरीब पति–पत्नी की साइकिल–सपना सैन
बीमार खरगोश – कोमल जागा
अपना खुद का पेड़–अभिषेक गुर्जर

याद की धूप छाँव में

मुजे मचर काट रहे थे–लवकुश बैरवा
एक तो बला टली–रविना शर्मा
खाड़ आई रा था–अनूप बैरवा
मैंने पूचा कि – हर्षिता
तो मैं मानी नहीं–रविना बैरवा
कितना पानी आ रहा है – रिकेश बैरवा
कल हमारी गाड़ी गिर गई थी–ईशु कुमावत
रबड़ी कीचड़–ज्योति बैरवा
बहुत मौज आ रही है–नरेन्द्र नायक, अजय, दिलखुश बैरवा
कान्जी भाई उठ जीमने जाना है–रोहित नायक
सूग जाए तो हंदर हाना–मुस्कान बैरवा

सम्पादन : प्रभात
डिज़ाइन : लोकेश राठौर
वितरण : अंकुश शर्मा
आवरण चित्र : सुनीता
वर्ष 16 अंक 169–170

प्रबंधन
विष्णु गोपाल
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
एच–1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर
मानटाउन, सवाई माधोपुर,
राजस्थान– 322001
टेलीफोन 07462–220957

'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

शिक्षा के ग्रामीण केन्द्र की ओर

छाते में छुपना – भूमिका मीना

बात लै चीत लै

माथो फोड़ो – कविता बैरवा

गतिविधि, पहेलियाँ और हीहीठीठी

लड़की और खुमिया

दो लड़कियाँ जंगल से खुमिया बटोर कर घर लौट रही थी।
उनके रास्ते में रेल लाइन आती थी।
उन्होंने सोचा कि गाड़ी तो अभी दूर है, इसलिए वे पुश्ते पर चढ़कर रेल की पटरी लाँधने लगी।
अचानक उन्हें इंजन का शोर सुनाई दिया। बड़ी लड़की वापस भाग गई मगर छोटी रेलवे लाइन लाँघ गई।
बड़ी लड़की ने चिल्लाकर अपनी बहन से कहा–'वापस मत आना।'
मगर इंजन नजदीक आ गया था और इतना शोर मचा रहा था कि छोटी लड़की अपनी बड़ी बहन की बात साफ तौर पर सुन नहीं पाई। उसने सोचा कि उसे वापस भाग आने को कहा गया है। वह पटरी को लाँघती हुई वापस भाग चली। उसने ठोकर खाई और उसकी खुमिया बिखर गई। वह खुमिया समेटने लगी।

इंजन नजदीक आ चुका था। ड्राइवर ने जोर से सीटी बजाई।
बड़ी बहन चिल्लाई–''खुमिया पड़ी रहने दो।' मगर छोटी लड़की को लगा कि उसे खुमिया समेटने के लिए कहा गया है। वह पटरियों के बीच रेंगती हुई खुमिया समेटती रही।
ड्राइवर के लिए गाड़ी रोकना संभव नहीं था। इंजन एक बार फिर पूरे जोर से सीटी बजाई और गाड़ी लड़की के ऊपर से गुजर गई।

बड़ी लड़की चीख उठी और बिलख बिलख कर रो पड़ी। सभी मुसाफिर खिड़कियों से झाँक रहे थे और कण्डक्टर यह देखने के लिए भागता हुआ गाड़ी के आखिरी सिरे पर जा पहुँचा कि लड़की का क्या हुआ।

गाड़ी जब गुजर गई तो सभी ने देखा कि लड़की सिर नीचे की ओर सटाए हुए, हिले डुले बिना पटरियों के बीच लेटी हुई है।

बाद में गाड़ी जब बहुत चली गई तो लड़की ने सिर ऊपर उठाया, उठकर खड़ी हुई, उसने खुमिया जमा की और बहन के पास भाग गई।

लियो टॉल्सटॉय

गीत कविताएँ

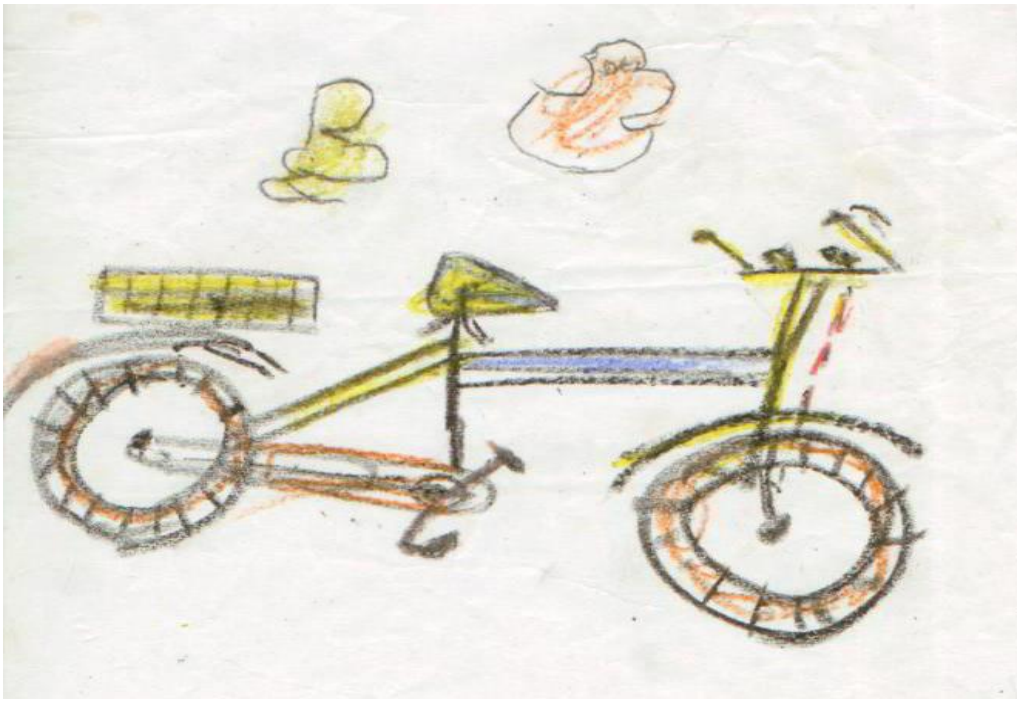

चित्र – रवीना, कक्षा–7, समूह–कालीबाई

धूल की भूल

मिट्टी को कहते हैं धूल
मेरे भाई ने फेंकी धूल
भाई की गलती माफ करो
भूल भाल कर साफ करो
हम बोले दीदी दीदी
दीदी ने माफी दे दी
दीदी का नाम सबीता
खतम कबीता

चाँद नायक, कक्षा–6, हरियाली समूह, फरिया।

साइकिल चलाऊँ

साइकिल चलाऊँ
पछाटी खाऊँ
हाथ टुड़ाऊँ
डाक्टर के पास जाऊँ
सुई देख बेहोश हो जाऊँ
पाणी का छींटा सूँ उठ
जाऊँ
सुई ठुकवाऊँ
एम्बुलेंस सूँ घर आऊँ
असी साइकिल न चलाऊँ

अनूप बैरवा, कक्षा–6,
हरियाली समूह, फरिया।

अमारो स्कूल

आज घर पर पानी आतो
फेर मैं स्कूल जातो
गिराड़ा म पानी बैतो
मैं उमें गिर जातो
फेर अमारो स्कूल आयो
स्कूल मं एक सर आयो
उनें कविता सुनाई
फेर हमसूं कविता लिखाई

दरबार नायक, कक्षा–7, हरियाली समूह, फरिया।

बारिश आने आने को है

बारिश आने आने को है
मन झूम झूम जाने को है
डुबुक डुबुक मेंढ़क पानी में
बस अब डुबकी लगाने को है
मोर खोल सारे मोरंगे
झुमक झुमक जाने को है

ज्योति गौतम, शिक्षिका, उमंग, शेरपुर।

चित्र– रूपा, उम्र–9 वर्ष, नवरंग शिक्षण केन्द्र बावरी बस्ती

ठण्डी बारिश गरम पकौड़े

हुआ सवेरा आँखें खोली
मनी प्लांट पर बूँदें डोली
फिर आयी बादल की टोली
झम झमाझम बारिश हो ली
पकौड़े तल लूँ – मौसी बोली
इससे बढ़िया क्या है बोली
जब ये बरखा की ऋतु आए
गरम पकौड़े किसे न भाए

जगदीश कोली, शिक्षक, उमंग शिक्षण केन्द्र कुण्डेरा।

एक कमरे का घर

हमारे मकान नहीं है
हमारे एक ही कमरा है
उसमें हम दस लोग रहते हैं
हम पाँच बहने हैं एक भाई है
कमरे में आलमारी है पलंग है
मम्मी पापा हैं दादा दादी हैं
सोने की जगह ही नहीं है
पापा हज्जाम हैं
कटिंग बनाने का काम करते हैं
खाना हम चौक में बनाया करते हैं
गैस को भी चौक में ही रखते हैं
दादा दादी लड़ाई करते हैं
लेकिन हम मम्मी पापा
दादा दादी से
बहुत प्यार करते हैं

सुनीता सैन, कक्षा–9, उमंग सेन्टर, कुण्डेरा।

प्रिया मीना, कक्षा–2, उदय किरण फैलोशिप सेंटर खाण्डोज

कहानियाँ

एक इंसान और उसका बेटा

सुबह सब गुवाड़ अपनी बकरियों को चराने डाँग में ले जाते हैं। एक इंसान दस बजे बकरी चराने चल पड़ा, उसके भी बकरियाँ थी। उसके बेटे ने रोका और बोला कि आज मैं जाऊँगा। इंसान गुस्से से बोला–'जा यहाँ से तू। तेरा काम यह है कि तू पढ़ाई कर।'
उसका बेटा स्कूल के लिए रवाना हो गया।
डाँग में उसके पापा को दो आदमी आते मिले। वे बोले कि 'इधर बड़ा नाहर है, इधर मत जाना।'
चार बजे तीनों ने बीड़ी पी।
पाँच बजे वो इंसान अँगोछे से पाँवों को बाँधकर पेड़ के नीचे बैठा था। पीछे से नाहर आ गया।
छह बजे झालर बजने के समय उसका बेटा आया। उसके बेटे ने पूछा–'दाज्जी मेरे पापा को देखा है क्या? आज मेरा पापा घर नहीं आया।'
दाज्जी ने कहा–'तुम जाओ और गाँव में से और आदमियों को बुलाकर लाओ।'
उसका बेटा गाँव में से आदमियों को बुला लाया। सब मिलकर डाँग में उसके पापा को हेरने गए। पूरे जंगल में टॉर्च की लाइट ही लाइट हो गई। फिर उसके पापा को हेर लिया। सब नाहर के चारों ओर हो गए। और उस इंसान को छुड़ाकर ले आए।

पायल सैनी, कक्षा–9, खवा, उमंग सेन्टर, जगनपुरा।

हरीश तिवारी, शिक्षक।

मानसिंह मीना, समन्वयक, उदय किरण फैलोशिप कार्यक्रम

गरीब पति–पत्नी की साइकिल

एक बार एक गरीब पति–पत्नी थे। उनको कभी कभी खाना भी नहीं मिलता था। उनके पास एक साइकिल थी। एक दिन वे अपनी साइकिल को बेचने जा रहे थे। रास्ते में साइकिल के आगे बकरियाँ आ गई। उन्होंने साइकिल की घंटी बजायी। घंटी की आवाज सुनकर कुछ बच्चे दौड़कर आ गए। बच्चों ने कहा–'आइसक्रीम दे भैया आइसक्रीम।' उन्होंने कहा कि 'बच्चो हमारे पास आइसक्रीम नहीं है।'

गरीब की पत्नी बोली–'क्यों न हम आइसक्रीम बेचना शुरू करें। हमने इतने प्रयत्न किए, किसी में भी सफलता नहीं मिली। क्या पता इस काम में हमें सफलता मिल जाए।'

गरीब आदमी ने कहा–'ठीक है।'

फिर उन्होंने बैंक से कुछ लोन लिया और आइसक्रीम बेचने का काम शुरू किया।

वे साइकिल लेकर जाते। घंटी बजाते। बच्चे आते और आइसक्रीम खरीद कर ले जाते।

अब वे एक गाँव से दूसरे गाँव जाने लगे। इस काम में उनको सफलता मिल गई।

उन्होंने बैंक का लोन भी चुका दिया और अब उन्हें कभी कभी भूखा भी नहीं रहना पड़ता था।

सपना सैन, कक्षा–10 उमंग सेन्टर – कुण्डेरा।

बीमार खरगोश

एक बिल्ली थी। वह बहुत भूखी थी। उसने एक खरगोश देखा। खरगोश ने भी देखा कि बिल्ली मुझे खाने के लिए आ रही है। बिल्ली ने उसे देखा कि वह बहुत बीमार है। खरगोश डर गया कि अब वह मुझे खा जाएगी।
बिल्ली ने उसे हाथ लगाया।
खरगोश बोला–'मुझे मत खाना। मैं बहुत बीमार हूँ।
बिल्ली ने कहा कि 'नहीं। मैं तुम्हें नहीं खाऊँगी।'
'पहले तुम अच्छे से ठीक हो जाओ।' बिल्ली ने जाते–जाते कहा।

कोमल जागा, कक्षा – 9

अपना खुद का पेड़

उस गाँव में बहुत लम्बे–लम्बे पेड़ थे। इसलिए उस गाँव को वनपुर नाम से जाना जाता था। उस गाँव में एक आदमी रहता था। उसका नाम सोनलाल था। उसके पास अपना खुद का कोई पेड़ नहीं था। वह उस गाँव में सबसे गरीब आदमी था। उसके पास पेड़ खरीदने का पैसा भी नहीं था। उसका बेटा आठ साल का हो चुका था।

सावन के दिन थे। सभी झूला झूलते। लेकिन सोनलाल के घर में पेड़ नहीं होने के कारण, उनका बच्चा झूला नहीं झूलता। उस बच्चे का नाम मानसिंह था।

सोनलाल, मानसिंह को उसके जन्मदिन पर एक पेड़ देना चाहता था। इसलिए वह कुछ पैसे इकट्ठे करने लग गया। कुछ दिनों बाद जब मानसिंह का जन्मदिन आया। सोनलाल ने उसे एक पेड़ उपहार में दिया।

अब मानसिंह का पेड़ बड़ा हो गया था। मानसिंह भी बड़ा हो गया था।

अब जब सावन का मौसम आता, मानसिंह उस पेड़ पर झूला झूलता। अब मानसिंह और सोनलाल बहुत खुश थे।

अभिषेक गुर्जर, कक्षा–7, समूह– लोटस, गिरिराजपुरा।

याद की धूप छाँव में

(याद की इन धूप छाँहों में बच्चों की भाषा को ज्यो का त्यों रखा गया है। ये प्रारूप उनकी ऊबड़–खाबड़ लेखनी में दूरबीन से खोजे गए हैं। उनकी रसीली भाषा का रस लीजिए।)

मुजे मचर काट रहे थे

मैंने देखा तो बारिस देखा। रात में मुजे मचर काट रहे थे। मेरी बहन सो रही थी। दूसरी खाट में मेरा भाई सो रहा था। और मेरी बहन का लड़का भी सो रहा था।
सुभह मेरा भाई उठाया तो फिर मैं सो गया। मेरा पापा, मेरी ममी, मेरा काका उठ गया। मेरी काकी चाई पीने बोला। चाई पीने आ जा। फिर मैंने बूला कि बहन चाई पीने जा।
पापा ने कहा कि बारी से दूद निकाल ले।
फिर मेरे पापा तो दूद निकाल रहे थे और मैं छतरी चडा रहा था।
फिर दूद काड लिया तो मेरी ममी सब्जी बना रही थी। फिर चाई बना रही थी। फिर हमने कहा पापा को चाई के लिए बोला।

लवकुश बैरवा, कक्षा–6, हरियाली समूह, फरिया।

एक तो बला टली

आज सुबह जब मैं उठी तो मेरी मम्मी दाल बना रही थी। मैंने मम्मी से कहा कि 'मेरी चाय कहाँ पर है?'
मम्मी बोली कि 'तुम्हें चाय दे तो दी।'
'पर मैंने तो चाय पी ही नहीं।' शायद नींद में थी इसलिए भूल गई।
फिर मम्मी बोली–'आज बारिश हो रही है तू कहाँ जाएगी।'
मैंने कहा कि 'स्कूल नहीं जाऊँगी तो मेरा एक दिन खराब हो जाएगा।'
फिर चाचा आए बोले–'मैं तीनों भाई बहनों को गाड़ी से छोड़ आऊँ।'
मैंने कहा–'चलो एक तो बला टली।' अब गाड़ी से स्कूल जाएँगे।

रविना शर्मा, कक्षा–8, समूह–हरियाली, फरिया।

खाड़ आई रा था

आज हम घर से आए तो बरसा हो री ती। हम बरसा में भीजते आए तो कीचड़ भी हो रा ता। मैं उ कीचड़ में बड़ गया। फिर गैला में एक खाड़ दिखाई दिया। और हम खाड़ में गए तो हम सब बै गए। हम सब चिलाए तो एक आदमी ने देख लिया। उसने खाड़ मं से काडा।
हम सब घर गए तो मेरी ममा ने बोला स्कूल क्यूँ गए कोनी? मेरे सात चलो। फिर हमको ममा ले गई तो खाड़ और जादा आ रा ता। मेरी ममा बीग गई और हमको भी नंइ कहा कुछ। तो एक डोकरी आ रई था। फिर सबी घर गया।

अनूप बैरवा, कक्षा–6, समूह–हरियाली।

मैंने पूचा कि

घर से निकलते समय पापा ने सोचा–अगर गीले हो गए तो?
फिर हम स्कूल के रस्ते तक पहुँचे। हमने गाड़ी मुड़ाई तो एक जगै गाड़ी गीर गही।
पापा ने जस तस गाड़ी समाली। मीरे लग गइ। मेरे पापा के गरदन में लगगी। मैंने पूचा कि पापा लग गई क्या?
पापा बोला–'नहीं लगी।'
पर मेरा पापा गरदन को पकड़ कर बटा थे ईसली मुज पता था कि पापा के लग गई।
इसलीए पापा गाड़ी खड़ी करगे।
घर जाते सम बारीस ह गई।

हर्षिता, कक्षा–6, समूह–हरियाली, फरिया।

तो मैं मानी नहीं

आज जब बारिश हो रही थी जब मेरे साथ कुछ ऐसा हुआ झिरमर बारिश बरस रही थी। मेरी मम्मी से कहा–'मेरा खाना बनाओ। मैं स्कूल जाऊँगी।'
ममा बोली–'आज मत जा। आज कीचड़ हो रहा है।'
तो मैं मानी नहीं। 'जाऊँगी जरूर। मैंने कंगी करी।
फिर मैं आ रही थी। इतने में पापा दुकान पर बैठा था। पापा बोला कितना कीचड़ हो रहा है मत जा।
पर मैं नहीं मानी। रास्ते में भौत कीचड़ हो रहा था। मेरे मन में आया कि मेरी मम्मी सई के री थी। मैं नहीं मानी। रास्ते में गारा हो रहा था। खाड़ आ रहा था। मैं तो देख कर चौंकगी।
फिर खाड़ में पैर डाला ठण्डा पानी में।
फिर मैं दोस्तों के साथ आ रही थी। दोस्तों के नाम–ज्योति, मुस्कान, सोनम भी थी। एक मैं भी थी। खुश खुश आ रही थी।

रविना बैरवा, कक्षा–6, समूह–हरियाली, फरिया।

कितना पानी आ रहा है

आज रात के बारिश से नाल में पानी भर गया। तो मैंने सोचा कि यहाँ का पानी इतना है तो हमारे स्कूल के पास के नाले में कितना पानी आ रहा है।
रास्ते में बहुत सारा कीचड़ हो रहा था और हम गिरते पड़ते आ रहे थे। बारिश की बूँदें गिरने लगी।
रास्ते में हमारे तीन गुरूजी आए। उन्होंने पूछा कि और बच्चे आ रहे हैं क्या?
हमने कहा कि कोई भी नहीं आ रहा है।
फिर मुझे सुरत आया कि नाले में कितना पानी आ रहा है। नाले में आए तो बहुत कम पानी था।
फिर स्कूल आते आते बारिश शुरू हो गई।

रिकेश बैरवा, कक्षा–7, समूह–हरियाली, फरिया।

कल हमारी गाड़ी गिर गई थी

आज सुबह मैं उठी तो मैंने देखा कि बारिश हो रही है। तो मैंने सोचा कि आज स्कूल क्यों जाऊँगी। तभी मेरे पापा आए और बोले–'आज स्कूल मत जा।'
मैंने कहा–'पापा मैं स्कूल जाऊँगी।'
मेरी मम्मी आई तो मेरे पापा से कहा कि 'ले जाओ स्कूल, क्या हो गया।'
मेरे पापा मान गए। हम स्कूल आने लगे तभी मुझे कुछ याद आया। कल हमारी गाड़ी गिर गई थी।
तो मैंने पापा से कहकर गाड़ी रुकाई। और थोड़ी दूर चलकर स्कूल पहुँच गई।

ईशु कुमावत, कक्षा–7, समूह–हरियाली, फरिया।

रबड़ी कीचड़

गाँव के रास्ते में दुकान वालों ने निकलने के लिए पत्थर जमा रखे थे। जब मैं उन पत्थरों से निकल रही थी तो मेरा पैर फिसल गया। वहाँ पर इतना कीचड़ था जैसे कोई रबड़ी हो।
खाड़ के पास थोड़ी दूर हमको सर दिखाई दिए। कुछ बच्चे आ रहे थे। सर उनको लेने चले गए।
स्कूल आकर मैंने हराभरा घास देखा और मैं बहुत खुश हो गई।

ज्योति बैरवा, कक्षा–6, समूह–हरियाली, फरिया।

रामरतन मीना, कक्षा–5, उदय किरण सेंटर हिरामन की ढाणी श्यामपुरा

बहुत मौज आ रही है

हम स्कूल आ रहे थे। टिप टिप बूँदें गिर रही थी। एक बच्चा रास्ते में ही पानी में नहाने लगा। वो शोर मचा रहा था।
मैंने कहा कि 'अब तो बारे आ जा। सर से कहूँगा।'
उसने कहा कि' मुझे बहुत मौज आ रही है। सर से मत कहना।'
सड़क पर एक पुल था। उसमें से पानी बह रहा था। हमने पानी के बहुत मजे लिए।
हम आगे गए तो तितलियाँ उड़ रही थी। पक्षी उड़ रहे थे। गाय भैंस चर रही थी।
रास्ते में पानी में कैसे कैसे करके बीछू जा रहा था। देखकर हमें हँसी आ गई।

नरेन्द्र नायक, अजय बैरवा, कक्षा–7, दिलखुश बैरवा, कक्षा–8, समूह–हरियाली, फरिया।

कान्जी भाई उठ जीमने जाना है

मैं जब सुबह उठा तो देखा कि बारिश की थोड़ी थोड़ी फुहार आ रही है। पापा खाट पर बैठा था। बहन कम्बल ओढ़ कर सो रही थी। मैं मुँह धोकर चाचा के घर गया तो चाचा का लड़का उसकी छोटी बहनों से लड़ रहा था कि 'तुमने मेरे पैसे क्यों लिए?'
फिर मैं कान्जी के पास गया। मैंने कहा–'कान्जी भाई उठ। हमें जीमने जाना है।'
ऐसा कहते ही कान्जी उठ गया।
फिर दरबार और नरेन्द्र को साथ लिया। हम स्कूल आ रहे थे तो कान्जी के जूते में मेरा पैर फँस गया और हम गिर पड़े। कान्जी ने दूसरे कपड़े पहने और फुहार शुरू हो गयी।

रोहित नायक, कक्षा–7, समूह–हरियाली, फरिया।

चित्र–सुरेश चंद, अकादमिक टीम लीडर, नवरंग कार्यक्रम

सूग जाए तो हंदर हाना

एक लड़की मुजे बुलाने हई।
मैं बोली –बारिस है रई है।'
मम्मी ने कहा –'यहाँ तो नहीं ह रही है।'
मेरा घर पर मन नहीं लगता।
मम्मी ने बोला–'गीली होगी तो घर में नहीं हाने दूँगी।'
जब मैं पडाई करके आई तो गीली होकर हाई।
मम्मी बोली–'कपड़ सूग जाएगा तो हंदर हाना।'

मुस्कान बैरवा, कक्षा–7, समूह–हरियाली, फरिया।

छाते में छुपना

एक दिन हम स्कूल गए जो कि तीन सालों से बंद हो चुकी थी। वहाँ बहुत बड़ा मैदान था जिसमें हम खेलने गए थे। लेकिन अब वहाँ कोई खिलाने वाला नहीं था। तो हम खुद ही खेले। बहुत समय हो गया। दोस्तो ने कहा–'घर चलो। बारिश का मौसम हो गया।'
एक दोस्त बोला–'मैं तो छाता लेकर आया हूँ। आते समय मेरी मम्मी ने मुझे दे दिया था।'
मैं बोली–'एक छाते से क्या होगा। तीनों कैसे छुपेंगे?'
वह बोला–'नहीं, मैं तुम्हें छुपा लूँगा।'
हम वापस खेलने लग गए। अचानक बारिश आ पड़ी।
दोस्त ने छाता खोला और बोला–'इसमें तो मैं ही छुपूँगा, तुम्हारे लिए जगह नहीं है।'
हमने कहा–'पहले तो बोल दिया था कि छुपा लूँगा।'
वह मुझसे बोला कि 'मैं मेरे दोस्त को छुपाऊँगा, तुम्हें नहीं।'
मैंने कहा–'ठीक है।'
उसका दोस्त बोला–'अगर तुम इसे नहीं छुपाओगे तो मैं भी नहीं छुपूँगा।'
वह बोला–'अगर तुझे छुपना हो तो छुप वरना तू भी यहाँ से जा।'
उसने हमें भरोसे में डाल दिया तो हमें बहुत बुरा लगा। फिर हमने उस पर भरोसा नहीं किया, भले ही उसकी बात सच ही क्यूँ न हो।
भूमिका मीना, कक्षा–9, उमंग सेन्टर, जगनपुरा।

निधि कुमावत, कक्षा–3, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

बात लै चीत लै

मीनाक्षी मीना, कक्षा–7, रा.उ.प्रा.वि. जमूलखेड़ा

माथो फोड़ो

अेक बार अेक गाँव मं मंदर छो। वा मंदर की भीत पै लिखाउँ आरीयो के 'माथो फोड़ो और खजानो ले जाओ।' तो गाँव का और गाँव के आसपास का सभी लोग लुगाई आरीया और व्हां माथो फोड़–फोड़ जारीया। पर उनकू कोई खजानो नीं मिल रीयो।

अेक दिन कहीं सूं अेक बणजारा बणजारी खड़ी बेछता जारीया छा। उननं मंदर मं देख्यौ क पागल होरीया के जो य्हां माथो फोड़–फोड जारीया। फेर वे दोनानं जार देख्यौ। व्हां अेक आदमी से पूछ्यौ के– 'भाई ये काँई कारण य्हां माथो फोड़–फोड़र जारीया।'

आदमी नं कइ कि–'भाई तू ही पड ले।'

वा बणजारा नं व्हां पड्यो– 'माथो फोड़ो और खजानो ले जाओ।'

फेर वानं वाकी गाड़ी मं से हाथौड़ी लारकेनी भगवान को माथो फोड़ दियौ। वामं कोइ नं खजानो छुपा रख्यो छो। फेर वा बिणजारो और बिणजारी खजाना कू निकाळ ले गीया।

गांव वाळा सब देखता ही रह गिया कि– 'आंपा अतरा दिन का यूंही माथो फोड़ रीया और खजानो तो या ले गियो।'

कविता बैरवा, फैलो, पुस्तकालय सेंटर बोदल।

भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1. दबी दबी आई, दबी दबी गई।
2. दिन देखे न रात देखे।
3. छोटो सो क आळ्यो, जिमें बैठ्यो बाबू काळ्यो।
4. एक ढाइ के नीचे दो कोचर झाँकै।
5. लाल कलर की मुंदड़ी पैरूं बार तुवार।

वर्षा, कक्षा–3, गाँव–शेरपुर

हीहीही–ठीठीठी

रमेश दिमागी – भाई, जिन्दगी में थोड़ा बेवकूफ होना भी जरूरी है?
परमेश सवाली – क्यों भाई क्यों?
रमेश दिमागी – अरे भाई समझदार होने पर घरवाले बहुत काम करवाते हैं।

पत्रकार – आर्थिक मंदी में आप लोग घबराए नहीं?
झक्कू – डिस्कवरी चैनल पर दिखाया तो गया था कि जंगलों में कैसे जिन्दा रहते हैं।

मरीज – डॉक्टर साहब आपकी फीस कितनी है?
डॉक्टर – पहली बार सौ रुपये दूसरी बार फ्री।
मरीज – डॉक्टर साहब मैं दूसरी बार आया हूँ।

रमेश दिमागी – छोटी छोटी चीजें अक्सर तकलीफदेह होती हैं?
परमेश सवाली – कैसे?
रमेश दिमागी – देखो न आप पहाड़ पर तो बैठ सकते हैं लेकिन सुई पर नहीं।

रमेश दिमागी – छोटी छोटी चीजें अक्सर तकलीफदेह होती हैं?
परमेश सवाली – कैसे?
रमेश दिमागी – देखो न आप पहाड़ पर तो बैठ सकते हैं लेकिन सुई पर नहीं।

पहेलियों के जवाब

1. चूमड़ी।
2. घड़ी।
3. चिमनी।
4. आंख।
5. मेंहदी।

रोहित महावर, फैलो, उदय किरण फैलोशिप सेंटर अल्लापुर

अधूरी कहानी पूरी करो

ये लोककथा फरिया में सूरज समूह के बच्चों ने सुनायी है। जितनी सुनायी वह मजेदार है लेकिन यह अधूरी है। लोककथा इससे आगे भी है। अगर आप में से किसी को आती हो तो लिखकर भेजें और न आती हो तो अपने आसपास किसी से सुनकर, लिखकर भेजें। भाषा इसकी यही रखें जो इधर के घरों और गाँवों में बोली जाती है।

ओखड़ी का ऊंदरा

सात ऊंदरा हीया। अेक ओखड़ी मं खेल रिया। अेक ऊंदरो आयौ र बोल्यौ 'की यार मोकू बी खिल्याल्यौ।'

सात ऊंदरा बोल्या–'की थारी लामी पूँछअ् जे तोकू नीं खिलावां। तू नीं, खाती क हात पूँछ कटुआार आ। जभी तोकू खिलांगा।'

ऊंदरा नं खाती क हाते पूँछ कटुआ ली। खाती नं पूँछ कू टापरी क ऊपर पटक दी। पूँछ मं लोई किड्याया।

वा लोई को भंडतो सात ऊंदरान खिन गियौ।

सात ऊंदरान गुड गियो तो ऊंदरा बोल्या–'तू तो दुरो। तू तो लोई को भंडरियो। तोकू नीं खिलावां। तू खाती क हात थारी पूँछ जुड़वार आजा।'

ऊंदरो खाती गुड गियो। बोल्यौ क खाती खाती म्हारी पूँछ जोड़ दै।

खोती बोल्यौ क थारी पूँछ तो कागलो ले गियौ।

ऊंदरो उचक उचक र छोडा प बैठ गियो। पाछै वा है नीं छोडा नं लेर भाज गियो।

अेक डोकरी बाळन कू चूला मं बळार रोटी कर री ही। ऊंदरा नं उकू छोडो दे दियौ। फेर डोकरी की चंदिया मं कूद रियौ हो। डोकरी बोली की म्हारी चंदिया मं कामी कूद रियौ।

ऊंदरो बोल्यौ की सुण म्हारी बात –

पूँछ कटाई को छोडो लियो
छोडो मैंनं तोकू दियौ
तू मोकू चंदिया कुन देअगी क?

तरूण सिंह राजावत, कक्षा–6
रा.उ.मा.वि. पालीघाट